PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 3, ISSUE 2

' संशय की एक रात ' के राम

डॉ. भरत अ. पटेल
हिन्दी विभागाध्यक्ष
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज,
विजयनगर, जि. साबरकांठा
गुजरात, भारत

पौराणिक रामकथा को हर युग का कवि अपनी दृष्टि से अपने अंदाज में दोहराता आया है | इसके प्रमुख दो कारण हो सकते हैं – १. रामकथा प्रत्येक भारतवासी की रगों में बहती है | अन्य धर्मवाले भी रामकथा के बारे में थोड़ा-कुछ तो अवश्य जानते ही हैं | २. कोई भी कवि या लेखक अपनी युगीन समस्याओं को रामकथा के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की आकांक्षा रखते हैं | बीसवीं शताब्दी में हुए दो विश्वयुद्धों तथा भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन के युद्धों ने भारत के युगचेता एवं संवेदनशील साहित्यकारों को झकझोर दिया | युद्धों से हुए विनाश , नरसंहार और युद्ध की विभीषिका से बचने का , मानव-कल्याण तथा विश्व-शांति का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए रामकथा और महाभारत की पौराणिक कथाओं का आधार आधुनिक साहित्यकारों ने लिया है | श्री नरेश मेहता ने ' संशय की एक रात ' की भूमिका में लिखा है – ' जिस प्रकार कुछ प्रश्न सनातन होते हैं , उसी प्रकार कुछ प्रज्ञा-पुरुष भी सनातन होते हैं | राम ऐसे ही एक प्रज्ञा-पुरुष हैं , जिनके माध्यम से प्रत्येक युग अपनी समस्याओं को सुलझाता रहा है | ' [१] मेहताजी ने प्रज्ञा-पुरुष राम में आधुनिक समस्याओं और विसंगतियों का आरोपण कर उनका समाधान ढूँढने का स्तुत्य प्रयत्न किया है |

आधुनिक युग का मनुष्य पुराने मानव-मूल्यों और नवीन समस्याओं के बीच घिरा हुआ है , ' टू बी ओर नोट टू बी ' में फँसा हुआ है | पुराने मूल्यों और मर्यादाओं तथा नए युग की समस्याएँ संक्रमण पैदा करती हैं | यही संक्रमण संशय का रूप धारण करता है | मेहताजी ने आधुनिक युग के मनुष्य के आधे-अधूरेपन को , संशयग्रस्त मन की छटपटाहट को ' संशय की एक रात ' प्रबन्ध में अभिव्यक्त किया है | श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा ने इस प्रबन्ध की भूमिका ' आधुनिक कविता की उपलब्धि : संशय की एक रात ' में लिखा है – " युद्ध स्वयं में मूल्यों के विघटन का परिणाम होता है | मर्यादाओं की विकृति ही युद्ध की आधार पीठिका होती है | स्वार्थ और परमार्थ जब

इतने निकट आ जाते हैं कि उनमें कोई धुँधली सी सीमारेखा भी अलगाव के लिए नहीं संभव होती , तब संक्रमण की स्थिति जन्मती है .... संशय हमेशा उस व्यक्ति की अभिव्यक्ति है जिसके मानस में एक चुके हुए संस्कार के वैभव की स्मृति तथा एक अजन्मे इतिहास की असमर्थता व्याप्त होती है | ' संशय की एक रात ' उसी स्वार्थ-परमार्थ की , मर्यादा और दायित्व की , चुके हुए संस्कार की स्मृति तथा अजन्मे इतिहास की वेदना से कलात्मक रूप से आद्यंत ओतप्रोत काव्य है | " [२]

' संशय की एक रात ' प्रबन्ध पढ़ने पर प्रतीत होता है कि राम के मन में दो प्रमुख संशय ऊहापोह मचाते थे – १. वैयक्तिक समस्या सार्वजनिक समस्या कैसे हो सकती है ? २. क्या युद्ध से शांति स्थापित हो पाएगी ? क्या युद्ध से मानवता और मानव-मूल्य प्रस्थापित हो सकेंगे ? इस प्रबन्ध के प्रथम सर्ग के आरंभ में राम रामेश्वर के सिंधु-तट पर उदास मनस्थिति में टहलते नजर आते हैं -

" कितनी बार कुचला
बालुओं को
स्वयं के पदचिह्नों व्यूहों से
घिरे बैठे रहे
दुर्ग निर्माते रहे ,
सीतमुख बनाते
सदा काँपी अँगुलियाँ
पर हाय –
यह बालुवाली जानकी
प्रतिसाँझ
ज्वारजल में समर्पित होती रही ;
क्या हो
क्या न हो के प्रश्न ने
थका डाली मुट्ठियाँ | " [३] यहाँ बालू में सीता की आकृति बनानेवाले विरही , उदासीन , उद्विग्न और क्या करूँ , क्या न करूँ के असमंजस में पड़े राम का चित्र जीवंत हो उठा है |

राम सोचते हैं कि वनवास जाने की नियति सिर्फ मेरी थी | मेरी पत्नी का अपहरण हुआ , यह केवल मेरी वैयक्तिक समस्या है | मेरे ही कारण कितने लोग दु:खी हुए हैं !

" अन्य प्रायश्चित करें मेरे लिए ,

दुख भोगें

वनों में भटकें अकारण ही

बिना वनवास की आज्ञा मिले ?

पिता की मृत्यु

विधवा जननियाँ

कौन है इनका निमित्त ?

पत्नी का हरण

पिता के मित्र जटायु का मरण

मेरे लिए –

उपेक्षित अंगद हुए,

देहदाही हुए हनुमान

किसके लिए ?

उर्मिला सी देवि

विरहणी किस प्रयोजन के लिए ?

व्यक्ति का वनवास

परिजन और पुरुजन के लिए

अभिशाप क्यों बन जाय ?

व्यक्तिगत मेरी समस्याएँ

क्यों ऐतिहासिक कारणों को जन्म दें ?

राम के कारण

निर्वसित हो ? " [४] यहाँ राम अपने परिजनों और मित्रों के दु:खी होने का कारण अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को मानकर आत्म-ग्लानि का अनुभव करते हैं | इस आत्म-ग्लानि का शिकार शायद ऐतिहासिक राम नहीं हुए हैं | ये नरेश मेहता के राम हैं , जिन पर आधुनिक युग के मनुष्य की समस्याएँ और घुटन , त्रासदी , आत्मग्लानि , चिंता आदि मनोवृत्तियाँ आरोपित हैं |

राम के मन में दूसरा प्रमुख संशय है , क्या युद्ध से शांति स्थापित हो पाएगी ? क्या युद्ध से मानवता और मानव-मूल्य प्रस्थापित हो सकेंगे ? लक्ष्मण जब चिंतित राम का उद्गार सुनते हैं तो उन्हें लगता है कि राम युद्ध के परिणाम से चिंतित हैं | अत: वे कहते हैं कि आप मेरे और अपने मित्रों के पौरुष पर विश्वास रखें , सामान्य जनों द्वारा निर्मित सेतुबंध और उनकी निष्ठा पर विश्वास रखें | हम अवश्य विजयी होंगे | तब राम प्रत्युत्तर देते हुए कहते हैं – मैं कापुरूष नहीं हूँ और न ही युद्ध मेरी कुंठा है | सच तो यह है कि युद्ध मुझे प्रिय नहीं है | दूसरे सर्ग में राम कहते हैं –

" मैं सत्य चाहता हूँ

युद्ध से नहीं ,

खड्ग से भी नहीं

मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ |

क्या यह सम्भव है ?

क्या यह नहीं है ? " [५]

युद्ध से मानव-कल्याण हो सकता है ? मनुष्य के रक्तपात से शान्ति प्रस्थापित हो सकती है ? राम का मन संशयग्रस्त है | उनका मन मानव के रक्त से भीगी जय को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है –

" यदि मानवीय प्रश्नों का उत्तर मात्र

युद्ध है / खड्ग है

तो –

लो समर्पित हैं तुम्हें

तुम्हारे अज्ञात जलों को ,

इस क्षण के द्वारा

वृष्टि भीगे उस महाकाल को

समर्पित है यह / धनुष , बाण , खड्ग और शिरस्त्राण |

मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए ,

बाणबिद्ध पाखी सा विवश

साम्राज्य नहीं चाहिए ,

मानव के रक्त पर पग धरती आती

सीता भी नहीं चाहिए ,

सीता भी नहीं | " [६]

द्वितीय सर्ग में पिता दशरथ की आत्मा की छाया राम से कहती है कि आजतक कीर्ति , यश , नारी , धरती , जय और लक्ष्मी किसी की कृपा से या भिक्षा में नहीं मिलते हैं | इन्हें अपने बाहुबल से अर्जित किया जाता है | तुम्हें अपनी अनास्था या संशयी व्यक्तित्व से युद्ध नहीं लड़ना है , असत्य के विरुद्ध लड़ना है | राम प्रश्न करते हैं – " लेकिन कौन सा ?

किसका असत्य ?

इस सत्यासत्य का निर्णय करगा कौन ? " [७]

छाया प्रत्युत्तर देती है कि पुत्र , संशय मत करो , यशस्वी बनने के लिए कर्म करो | तीसरे सर्ग में हनुमान कहते हैं कि सीता माता भले ही राम की पत्नी हो , किसी की बहू हो ,किसी की पुत्री हो पर हम कोटि-कोटि जनों की तो प्रतीक हैं , रावण के अशोकवन में बंदी हम साधारण जन की अपहृत स्वतन्त्रता हैं | तब राम का संशयग्रस्त मन कहता है –

" युद्ध की अनिवार्यता को जानता हूँ

अपने से अधिक

इन पृथुज्जन को मानता भी हूँ

किन्तु / इस युद्ध के उपरान्त

होगी शान्ति / इसका तो नहीं विश्वास | " [८]

विभीषण का मन भी शंकाग्रस्त हो जाता है | लक्ष्मण , सुग्रीव , हनुमान आदि की मंत्रणा के उपरान्त राम हताश से कहते हैं – जैसी परिषद की इच्छा | चतुर्थ सर्ग में राम का संदिग्ध मन सबके निर्णय को अपना निर्णय स्वीकार करते हुए कहते हैं –

" अब मैं निर्णय हूँ

सबका

अपना नहीं |

मुझसे मत प्रश्न करो

ओ मेरे विवेक !

मुझसे मत प्रश्न करो | " [९]

इस प्रकार पूरे प्रबंध में राम के संशयग्रस्त मन की व्यथा , व्याकुलता और पश्चाताप की बड़ी ही संजीदगी के साथ मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है | अंतत: राम युद्ध को अपना नहीं , सबका निर्णय स्वीकार करते हुए युद्ध की अनुमति देते हैं | ये संशय , ये प्रश्न पौराणिक राम में नहीं उठाए गए , क्योंकि उस युग में परिस्थितियाँ , परंपरा और विचारधाराएँ अलग थीं | आधुनिक युग में हुए दो विश्वयुद्धों की विभीषिका और निर्दोषों के रक्तपात ने मनुष्य की संवेदना को झकझोर दिया | अनेक बुद्धिजीवियों और कवियों-लेखकों ने युद्ध का विरोध करते हुए मनुष्य को शान्ति और कल्याण का संदेश दिया है | श्री नरेश मेहता का यह प्रबन्ध इसका सशक्त प्रमाण है |

संदर्भ-संकेत :

१. ' संशय की एक रात ' , भूमिका - श्री नरेश मेहता , लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद |
२. वही , पृष्ठ - १४-१५ |
३. ' संशय की एक रात ' पृष्ठ – ३-४ |
४. वही , पृष्ठ – १९-२० |
५. वही , पृष्ठ – ३१ |
६. वही , पृष्ठ – ३१-३२ |
७. वही , पृष्ठ – ४७-४८ |
८. वही , पृष्ठ – ६६ |
९. वही , पृष्ठ – ८८-८९ |